

पाठ - मेघ आए

शब्दार्थ-व्याख्या

1. मेघ आए बन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ-

- मेघ – बादल
- बन-ठन के, सँवर के – सजे-धजे, सुंदर रूप में
- बयार – ठंडी हवा
- आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली – वर्षा के आगमन की खुशी में हवा बहने लगी, शहरी मेहमान के आगमन की खबर सारे गाँव में तेज़ी से फैल गई
- पाहुन – अतिथि (विशेष रूप से दामाद)

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु के आगमन पर गाँव में उत्पन्न होने वाले आनंद और उत्साह का सजीव चित्रण किया है। कवि ने बादलों को एक विशेष अतिथि के रूप में प्रस्तुत किया है, जो बड़े बन-ठनकर गाँव में आए हैं, जैसे कोई दामाद अपने ससुराल सज-धज कर आता है। उनके स्वागत में ठंडी हवा नाचती-गाती चल रही है, मानो उनके आगमन का संदेश पूरे गाँव में फैला रही हो। बादलों के आगमन से गाँव में उमंग की लहर दौड़ जाती है, लोग उत्सुकता से अपने घरों की खिड़कियाँ और दरवाज़े खोलकर इस प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने लगते हैं, जैसे किसी सम्मानित मेहमान के स्वागत में पूरा गाँव उमंग से भर उठता है।

2. पेड़ झुक झँकने बन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ-

- पेड़ झुक झँकने लगे – पेड़ हवा में झुककर बादलों को देखने लगे
- गरदन उचकाए – उत्सुकतापूर्वक सिर उठाना
- धूल भागी घाघरा उठाए – धूल तेज़ हवा में उड़ने लगी, जैसे स्त्रियाँ घाघरा संभालकर दौड़ रहीं हों
- बाँकी चितवन – बाँकपन लिए दृष्टि, तिरछी नज़र
- नदी ठिठकी – नदी का जल थम-सा गया
- घूँघट सरके – संकोचवश घूँघट थोड़ा हट गया

व्याख्या- कवि वर्षा ऋतु के आगमन को एक सुंदर दृश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। बादलों के छाने और आँधी चलने पर धूल इस तरह उड़ने लगती है, जैसे गाँव की महिलाएँ घाघरा उठाकर दौड़ रही हों। हवा के प्रभाव से पेड़ झुककर ऐसे प्रतीत होते हैं मानो वे अपनी गर्दन उठा उठाकर उत्सुकता से मेहमान (बादलों) को देखने का प्रयास कर रहे हों। वहीं, नदी रूपी औरतें ठिठककर संकोच भरी नजरों से बादलों को निहार रही है, जैसे कि उन लोगों ने अपना घूँघट हल्का-सा सरका लिया हो। इस प्रकार, पूरे प्राकृतिक वातावरण में उल्लास और उत्सुकता का भाव उमड़ आया है, जो बादलों के आगमन को एक स्वागत करने योग्य अवसर के रूप में दर्शाता है।

3. बूँढ़े पीपल नेबन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ-

- बूँढ़े पीपल – पुराना (बूढ़ा) पीपल का पेड़
- जुहार करना – आदर के साथ झुककर नमस्कार करना
- बरस बाद सुधि लीन्हीं – कई वर्षों बाद याद किया
- अकुलाई लता – व्याकुल लता (बेल)
- ओट हो किवार की – दरवाजे की आड़ में छिपकर
- हरसाया ताल – प्रसन्न हुआ तालाब
- पानी परात भर के – पानी से भरी परात (बर्तन) लाया

व्याख्या- कवि ने वर्षा ऋतु के आगमन को मानवीय भावनाओं से जोड़कर उसका सुंदर चित्रण किया है। जिस प्रकार कोई दामाद लंबे समय बाद ससुराल लौटता है, तो परिवार के बड़े-बुजुर्ग झुककर उसका आदरपूर्वक स्वागत करते हैं, वैसे ही बूढ़ा पीपल भी झुककर बादलों का अभिवादन करता है। वहीं, लता रूपी नवविवाहिता मानो दरवाजे की ओट से नखरे से कह रही हो— “इतने दिनों बाद ही तुम्हें हमारी याद आई?” इसी खुशी में तालाब भी उमंग से भरकर अतिथि का स्वागत करने के लिए पानी से परात भर लाया है, जैसे कोई मेहमान के पाँव धोने के लिए जल लाता हो। इस प्रकार, कवि ने प्रकृति के माध्यम से बादलों के स्वागत को एक पारिवारिक मिलन की तरह दर्शाया है, जिसमें प्रेम, उलाहना, और उत्साह का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

4. क्षितिज अटारीबन-ठन के सँवर के।

शब्दार्थ-

- क्षितिज-अटारी गहराई – अटारी पर पहुँचे अतिथि की भाँति क्षितिज पर बादल छा गए
- दामिनी दमकी – बिजली चमकी, तन-मन आभा से चमक उठा
- क्षमा करो गाँव खुल गई अब भरम की – बादल नहीं बरसेगा का श्रम टूट गया, प्रियतम अपनी प्रिया से अब मिलने नहीं आएगा – यह श्रम टूट गया
- बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके – मेघ झर-झर बरसने लगे, प्रिया-प्रियतम के मिलन से खुशी के आँसू छलक उठे

व्याख्या- कवि ने यहाँ बादलों के आगमन को प्रियतम के आगमन से जोड़ा है। अब तक प्रेमिका को उनके आने की सूचना मात्र एक भ्रम लग रही थी, लेकिन जब बादल क्षितिज रूपी अटारी तक पहुँच जाते हैं और बिजली चमक उठती है, तो मानो उसके हृदय में भी प्रेम की चिंगारी जाग उठती है। प्रियतम को सामने देखकर उसका सारा संदेह दूर हो जाता है, और वह मन ही मन अपने संकोच व अविश्वास के लिए क्षमा माँगने लगती है। फिर मिलन की इस अपार खुशी में, जैसे

बाँध टूट जाता है और प्रेम के अश्रु झर-झर बहने लगते हैं, ठीक वैसे ही वर्षा की बूँदें पृथ्वी पर बरसने लगती हैं, जो मिलन की मधुरता को और भी गहरा बना देती हैं।

प्रश्न अभ्यास

1. बादलों के आने पर प्रकृति में जिन गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर- बादलों के आने पर प्रकृति में भिन्न तरह के परिवर्तन आते हैं। बादलों के आने की सूचना बयार नाचते-गाते देती हुई चलती है। बादलों के आगमन की सूचना पाकर लोग अतिथि सत्कार के लिए घर के दरवाज़े तथा खिड़कियाँ खोल देते हैं। वृक्ष कभी गर्दन झुकाकर तो कभी उठाकर उनको देखने का प्रयत्न कर रहे हैं। आंधी आकर धूल को उड़ाती है। प्रकृति के अन्य रूपों के साथ नदी ठिठक गई तथा घूँघट सरकाकर आँधी को देखने का प्रयास करती है। सबसे बड़ा सदस्य होने के कारण बूढ़ा पीपल आगे बढ़कर आँधी का स्वागत करता है। तालाब पानी से भर जाते हैं। आकाश में बिजली चमकती है और वर्षा के बूँदें मिलन के आंसू बहाते हैं।

2. निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं? धूल, पेड़, नदी, लता, ताल

उत्तर-

- | | | |
|---------|---|------------------------------|
| 1. धूल | - | स्त्री |
| 2. पेड़ | - | नगरवासी |
| 3. नदी | - | अन्य स्त्री |
| 4. लता | - | मेघ की प्रतीक्षा करती नायिका |
| 5. ताल | - | सेवक |

3. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों ?

उत्तर- लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट से देखा क्योंकि वह मेघ के देर से आने के कारण व्याकुल हो रही थी तथा संकोच वश उसके सामने नहीं आ सकती थी।

4. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भ्रम की (ख) बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

उत्तर-

(क) नायिका को यह भ्रम था कि उसके प्रिय अर्थात् मेघ नहीं आएँगे परन्तु बादल रूपी नायक के आने से उसकी सारी शंकाएँ मिट जाती है और वह क्षमा याचना करने लगती है।

(ख) मेघ के आने का प्रभाव सभी पर पड़ा है। नदी ठिठककर कर जब ऊपर देखने की चेष्टा करती है तो उसका घूँघट सरक जाता है और वह तिरछी नज़र से आए हुए आंगतुक को देखने लगती है।

5. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए ?

उत्तर- मेघ रूपी मेहमान के आने से हवा के तेज बहाव के कारण आँधी चलने लगती है जिससे दरवाजे - खिड़कियां खुलने लगते हैं, पेड़ अपने संतुलन खो देते हैं। नदी और तालाब के पानी में उथल - पुथल होनी लगती है। पीपल का पुराना पेड़ भी झुक जाता है। अंत में बिजली कड़कने के साथ वर्षा होने है।

6. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर- बहुत दिनों तक न आने के कारण गाँव में मेघ की प्रतीक्षा की जाती है। जिस प्रकार मेहमान (दामाद) बहुत दिनों बाद आते हैं, उसी प्रकार मेघ भी बहुत समय बाद आते हैं। अतिथि जब घर आते हैं तो सम्भवतः उनके देर होने का कारण उनका बन-ठन कर आना ही होता है। कवि ने मेघों में सजीवता डालने के लिए मेघों के 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात कही है।

7. कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर-

मानवीकरण अलंकार :

1. आगे-आगे नाचती बयार चली यहाँ **बयार का स्त्री के रूप में** मानवीकरण हुआ है।
2. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। **मेघ का दामाद के रूप में** मानवीकरण हुआ है।
3. पेड़ झुक झँकने लगे गरदन उचकाए। **पेड़ों का नगरवासी के रूप में** मानवीकरण किया गया है।
4. धूल भागी घाघरा उठाए। **धूल का स्त्री के रूप में** मानवीकरण किया गया है।
5. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की **पीपल का पुराना वृक्ष गाँव के सबसे बुजुर्ग आदमी के रूप में** है।
6. बोली अकुलाई लता **लता स्त्री की प्रतीक है।**

रूपक अलंकार:

1. क्षितिज अटारी - यहाँ **क्षितिज को अटारी के रूपक द्वारा** प्रस्तुत किया गया है।
2. दामिनी दमकी - **दामिनी दमकी को बिजली के चमकने के रूपक द्वारा** प्रस्तुत किया गया है।
3. बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके। **झर-झर मिलन के अश्रु द्वारा बारिश को पानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।**

8. कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- कविता में रीति - रिवाजों के माध्यम से वर्षा ऋतु का चित्रण किया गया है। मेहमान के आने पर पूरे गाँव में उल्लास और उमंग माहौल होता है। सभी लोग अपने-अपने तरीकों से मेहमान के स्वागत में जुट जाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ मेहमान से पर्दा करने लगती हैं, बुजुर्ग झुककर उनका स्वागत करते हैं, पैरों को धोने के लिए परात में पानी लाया जाता है। इस प्रकार से इस कविता में कुछ ग्रामीण रीति-रिवाजों का चित्रण हुआ है।

9. कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान (दामाद) के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर- कविता में मेघ और दामाद के आगमन में समानता बताई गई है। जब गाँव में मेघ दिखते हैं तो गाँव के सभी लोग उत्साह के साथ उसके आने की खुशियाँ मनाते हैं। हवा के तेज़ बहाव से पेड़ अपना संतुलन खो बैठते हैं, नदियों तथा तालाबों के जल में उथल-पुथल होने लगती है। मेघों के आगमन पर प्रकृति के अन्य अवयव भी प्रभावित होते हैं। ठीक इसी प्रकार किसी गाँव में जब कोई दामाद आता है तो गाँव के सभी सदस्य उसमें बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। स्त्रियाँ चिक की आड़ से दामाद को देखने का प्रयत्न करती हैं, गाँव के सबसे बुजुर्ग आदमी सर्वप्रथम उसके समक्ष जाकर उसका आदर-सत्कार करते हैं। पूरी सभा का केन्द्रित पात्र वहीं होता है।

10. काव्य-सौंदर्य लिखिए -

**पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।**

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों में पाहुन अर्थात् दामाद के रूप में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। कवि ने प्रस्तुत कविता में चित्रात्मक शैली का उपयोग किया है। इसमें बादलों के सौंदर्य का मनोरम चित्रण हुआ है। कविता की भाषा सरल तथा सहज होने के साथ ग्रामीण भाषा जैसे पाहुन शब्द का भी इस्तेमाल किया गया है। यहाँ पर बन ठन में ब वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

रचना और अभिव्यक्ति

11. वर्षा के आने पर अपने आसपास के वातावरण में हुए परिवर्तनों को ध्यान से देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर- वर्षा के आने पर वातावरण में ठंड बढ़ जाती है। पेड़ पौधे ताजा दिखाई देने लगते हैं। गड्ढों में पानी भर जाता है। सड़कें चमकने लगती हैं। बच्चों का झुण्ड बारिश का मजा लेते दिखाई देने लगता है। सड़कों पर पानी जमा होने कारण चलने में असुविधा भी होती है और यातायात सम्बन्धी दिक्कतें भी होती हैं। वातावरण में गरमी की समाप्ति होने से लोगो को राहत मिलती है।

12. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है ? पता लगाइए।

उत्तर- पीपल वृक्ष की आयु सभी वृक्षों से बड़ी होती है। गाँवों में पीपल की पूजा की जाती है इसी कारण गाँव में पीपल वृक्ष का होना अनिवार्य माना जाता है इसीलिए पुराना और पूजनीय होने के कारण पीपल को बड़ा बुजुर्ग कहा गया है।

13. कविता में मेघ को 'पाहुन' के रूप में चित्रित किया गया है। हमारे यहाँ अतिथि (दामाद) को विशेष महत्व प्राप्त है, लेकिन आज इस परंपरा में परिवर्तन आया है। आपको इसके क्या कारण नजर आते हैं, लिखिए।

उत्तर- हमारे यहाँ अतिथि को देवता तुल्य मन गया है। लोग आज भी इस परंपरा का पालन करते हैं। परन्तु बदलते समाज में इस व्यवस्था में कई परिवर्तन आए हैं। इसके कई कारण हैं जैसे संयुक्त परिवारों का टूटना, शहरीकरण, पाश्चात्य संस्कृति की और बढ़ता झुकाव, महँगाई, और व्यस्तता ऐसे कुछ कारण हैं। जिसके फलस्वरूप आज का मनुष्य केवल अपने बारे में ही सोचता है। उसके पास दूसरों को देने के लिए समय तथा इच्छा का अभाव हो चला है और परिणामस्वरूप यह परम्परा धीरे-धीरे गायब होती जा रही है।

भाषा अध्ययन

14. कविता में आए मुहावरों को छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर-

1. बन-ठन के - (तैयारी के साथ) मेहमान हमेशा बन-ठन के हैं।
2. सुधि लेना - (खबर लेना) मैंने अपने प्रिया मित्र की कई दिनों तक सुधि नहीं ली है।
3. गाँठ खुलना - (समस्या का समाधान होना) आपसी बातचीत द्वारा मन की कई गाँठें खुल जाती हैं।
4. बाँध टूटना - (धैर्य समाप्त होना) कई घंटे बिजली कटी होने से मोहन के सब्र का बाँध टूट गया।

15. कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर- बयार, पाहुन, उचकाना, जुहार, सुधि-लीन्हीं, किवार, अटारी, बन ठन, बाँकी, पराता

16. मेघ आए कविता की भाषा सरल और सहज है - उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'मेघ आए' कविता की भाषा सरल तथा सहज है। निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
2. पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के।
3. पेड़ झुककर झाँकने लगे गरदन उचकाए।
4. बरस बाद सुधि लीन्हीं
5. पेड़ झुककर झाँकने लगे

उपर्युक्त पंक्तियों में ज्यादातर आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं पर गाँव का माहौल स्थापित करने के लिए ग्रामीण भाषा का भी प्रयोग किया गया है जिसे समझने में कठिनाई नहीं होती है।